# मित्रता

## ||अभ्यास प्रश्न ||

## गद्यांशो पर आधारित प्रश्न

- निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- (क) हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं जिसे जो जिस रूप का चाहे उस रूप का करे चाहे राक्षस बनावे, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है जो हमसे अधिक दृढ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है।

I. उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिंदी के 'गद्य-खंड' के 'मित्रता' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक 'आ0 रामचंद्र शुक्ल' जी हैं।

II. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – शुक्ल जी का कथन है कि जब हम अपने घर से बाहर निकलकर समाज में कार्य आरम्भ करते हैं, तब हम प्रायः अपरिपक्व ही होते हैं। उस समय हमारा मन कोमल होता है। हम जिस किसी स्वभाव के लोगों के सम्पर्क में आते हैं, उनका हमारे चित्त पर अवश्य प्रभाव पड़ता है;

क्योंकि हमें उस समय अच्छे-बुरे का विवेक नहीं होता। हमारे विचार अच्छी तरह शुद्ध नहीं होते और हमारा स्वभाव पूरी तरह विकसित भी नहीं होता।

III. हमें किन लोगों का साथ नही करना चाहिए।

उत्तर – हमे ऐसे लोगो का साथ नही करना चाहिये जो हमसे अधिक दृढ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं।

(ख) "विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाये उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया।" विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे तब वे हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि वे हमें उत्तमतापूर्वक जीवन निर्वाह करने में हर

प्रकार से सहायता देंगे। सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है, ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक पुरुष को करना चाहिए।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए। (उपर्युक्त)

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर –आ. शुक्ल जी कहते हैं कि जो मित्र विश्वास के योग्य होता है जीवन मे उससे बहुत बडी सुरक्षा रहती है। जिसे विश्वासी मित्र मिल जाये ये समझो कि उसे जीवन की अमूल्य निधि मिल गयी है।

(iii) हमें अपने मित्रों से क्या आशा करनी चाहिए?

उत्तर –हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे तब वे हमें उत्साहित करेंगे।

(iv) लेखक ने सच्ची मित्रता की तुलना किससे की है ?

अथवा विश्वासपात्र मित्र की तुलना किससे की है?

उत्तर – लेखक ने सच्ची मित्रता की तुलना उत्तम से उत्तम वैद्य की निपुणता तथा माता के समान धैर्य से की है।

(v) लेखक ने अच्छे मित्र के क्या-क्या कर्तव्य बताये हैं?

उत्तर – एक अच्छे मित्र का कर्त्तव्य है कि वह उत्तम संकल्पों से मित्र को दृढ़ करें, दोषों और त्रुटियों बचाएँ, सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करें, जब कुमार्ग पर पैर रखे, तब वे सचेत करें, जब मित्र हतोत्साहित हों तब वे उत्साहित करें।

(ग) मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिससे हम स्नेह न कर सकें। जिससे अपने छोटे-छोटे काम तो हम निकालते जायँ पर भीतर ही भीतर घृणा करते रहें? मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें: भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना

प्रीति पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए ऐसी सहानुभूति, जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। नित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं कि दो मित्र एक ही प्रकार के कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। इसी प्रकार प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या चांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। प्रीति और मित्रता रही है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए। उपर्युक्त

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- शुक्ल जी कहते हैं कि दो मित्रो के मध्य सच्ची सहानुभूति होनी चहिए एक की हानि को दूसरा अपनी भी हानि समझे व एक के लाभ को दूसरा भी लाभ समझे अर्थात सुख व दुख मे समान हो।

(iii) मित्र किसे कहते हैं?

उत्तर- जिसके गुणों की हम प्रशंसा भी करें तथा जिससे हम स्नेह भी कर सकें उसे ही मित्र कहते हैं।

(iv) हमारे और हमारे मित्र के बीच कैसी सहानुभूति होनी चाहिए?

उत्तर- हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए।

(v) सच्चा मित्र कैसा होना चाहिए?

उत्तर- सच्चे मित्र मे सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए एक की हानि को दूसरा अपनी भी हानि समझे व एक के लाभ को दूसरा भी लाभ समझे अर्थात सुख व दुख मे समान हो।

(घ) यह कोई बात नहीं हैं कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक- दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हो। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूंढ़ता है, निर्बल बली का धीर

उत्साही का उच्च आकांक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था। नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए। (उपर्युक्त)

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक के अनुसार समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर क्यों आकर्षित होते हैं?

उत्तर- समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक- दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हो।

(ङ) मित्र का कर्तव्य इस प्रकार बताया गया है- 'उच्च और महान् कार्य में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निज की सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।' यह कर्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़-चित्त और सत्य संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध

हृदय के हो, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए। (उपर्युक्त)

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) हमें कैसे मित्रों की खोज में रहना चाहिए?.

उत्तर - हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था।

(च) उनके लिए न तो बड़े-बड़े वीर अद्भुत कार्य कर गये हैं और न बड़े-बड़े ग्रन्थकार ऐसे विचार छोड़ गये हैं, जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्विकता की उमंगें उठती हैं। उनके लिए फूल-पत्तियों में कोई सौन्दर्य नहीं, झरनों के कल-कल में मधुर संगीत नहीं, अनन्त सागर-तरंगों पर गम्भीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का आनन्द नहीं, उनके भाग्य में सच्ची प्रीति का सुख और कोमल हृदय की शान्ति नहीं। जिनकी आत्मा अपने इन्द्रिय-विषयों में ही लिप्त है; जिनका हृदय नीचाशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नाशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अन्धकार में

पतित होते देख कौन ऐसा होगा जो तरस न खाएगा? उसे ऐसे प्राणियों का साथ न करना चाहिए।

I. उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए। (उपर्युक्त)
II. हमें किस प्रकार के प्राणियों का साथ नहीं करना चाहिए?
उतर- रेखांकित अंश लिखे
III. लेखक किस बात पर तरस खाने की बात कह रहा है?

उत्तर -नाशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अन्धकार में पतित होते देख तरस खाने की बात कह रहा है।

(छ) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बंधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढ़े में गिगती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली सुदृढ़ बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जायगी।

I. उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए। (उपर्युक्त)
II. गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

III. कुसंग का क्या प्रभाव होता है? अथवा कुसंग का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर किस प्रकार पड़ता है?

उत्तर - सम्पूर्ण गद्यांश लिखे.

IV. युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो उसका क्या परिणाम होगा?

(b) कुसंग और अच्छी संगति में क्या अन्तर है?

उत्तर- किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बंधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढ़े में गिगती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली सुदृढ़ बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जायगी।

(ज) सावधान रहो, ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा अथवा तुम्हारे चरित्र बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकने वाले आगे चलकर आप सुधर जायँगे नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जायगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी; क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है ? तुम्हारा विवेक कुण्ठित हो जायगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जायगी। अन्त में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे; अतः हृदय को

उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर – (उपर्युक्त)

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) हृदय को उज्ज्वल रखने का क्या उपाय है?

उत्तर - हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो।

(झ) बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके घड़ी भर के साथ से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती हैं, क्योंकि उतने ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिससे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए। (उपर्युक्त)

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) बुराई की प्रकृति कैसी होती है?

उत्तर - बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है।